दिनांक : 22 SEP 1997

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री अविरज चांगदेव शिंदे द्वारा लिखित " चंद्रगुप्त विद्यालंकार के नाटक : संवेदना और शिल्प " लघु शोध–प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड्.,पीएच.डी.
अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी)
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
तथा
प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद ।

दिनांक: 22 सितम्बर , 1997

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री अविराज चांगदेव शिंदे ने मेरे निर्देशन में " चंद्रगुप्त विद्यालंकार के नाटक : संवेदना और शिल्प" लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं,मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त पढ़कर और पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ ।

कोल्हापुर ।

दिनांक : 22 सितम्बर, 1997

शोध-निर्देशक

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

प्रख्यापन

' चंद्रगुप्त विद्यालंकार के नाटक: संवेदना और शिल्प" लघु शोध–प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । प्रस्तुत रचना इससे पूर्व इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

कोल्हापुर

दिनांक 22 सितम्बर, 1997

शोध–छात्र

(अविराज चांगदेव शिंदे)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

एम्.ए. की पढ़ाई खत्म करने के बाद मेरे मन में स्थित ज्ञान लालसा की पूर्ति हेतु शोध–कार्य करने का मेरा निश्चय स्वाभाविक ही था । इस संदर्भ में मैंने अपने आदरणीय गुरू डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से बातचीत की और विविध विधाओं का अध्ययन शुरू किय । अध्ययन के सिलसिले में मुझे चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी का " न्याय की रात " नाटक पढ़ने को मिला । इस नाटक ने मुझे बहुत प्रभावित किया । अतः मैंने डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से जब इस नाटक के बारे में जिक्र किया तब आपने विद्यालंकार जी के अन्य नाटकों को पढ़ने के लिए कहा । मैंने नाटक–कोश में उनके चार नाटकों को पाया ।उनमें से उनके दो नाटक " रेवा " और " अशोक " मुझे पढ़ने को मिले ।उनका " देव और मानव " नाटक कहीं भी प्राप्त नहीं हुआ । इसी दौरान डॉ. चव्हाण जी के निर्देशन में मैंने चंद्रगुप्त जी के नाटकों पर शोध–कार्य प्रारंभ किया । इस विषय का अध्ययन करते वक्त मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे —

1. विद्यालंकार जी का जीवन और व्यक्तित्व कैसा है ?
2. विद्यालंकार जी के नाटकों के विषय कौन–से हैं ?
3. विद्यालंकार जी के नाटकों कीमूल संवेदना क्या है ?
4. विवेच्य नाटकों का शिल्प कैसा है ?
5. विवेच्य नाटक रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से कैसे हैं ?
6. नाटकों में किस काल का चित्रण आया है ।

अध्ययन के उपरान्त जो निष्कर्ष मुझे प्राप्त हुए वे उपसंहार में दर्ज हैं । अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है ।

प्रथम अध्याय—

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक " चंद्रगुप्त विद्यालंकार : जीवन तथा साहित्य " है । इसके अन्तर्गत चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी का व्यक्ति परिचय, अंतरंग तथा बहिंरग व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का परिचय दिया है । इसके साथ ही इसमें उनका साहित्यिक परिचय तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है । अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं ।

द्‌वितीय अध्याय---

प्रस्तुत अध्याय "विवेच्य नाटकों का विषयगत विवेचन" शीर्षक से अभिहित है जिसमें प्रकाशन क्रम के अनुसार विद्यालंकार जी के नाटकों की कथावस्तु दी है । साथ-साथ नाटकों का मूल्यांकन भी किया गया है । अंत में उपलब्ध निष्कर्ष दिए गए है ।

तृतीय अध्याय--

यह अध्याय " विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना " को समर्पित है । यह शोध कार्य का केन्द्र बिन्दु होने के कारण प्रस्तुत अध्याय में "संवेदना " शब्द अर्थ और परिभाषा पर चिंतन किया है । राष्ट्रीय संवेदना से तात्पर्य, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीयता का जन्म, समस्या और संवेदना, राष्ट्रीय संवेदना का मूल स्रोत , नाट्य साहित्य और राष्ट्रीय संवेदना आदि विषयक विवेचन है । विवेच्य नाटकों की संवदेना और परिवर्तित मानसिक स्थिति तथा राष्ट्र की संस्कृति पर विस्तृत विचार किया गया है । अंत में निष्कर्ष दिये हैं ।

चतुर्थ अध्याय--

प्रस्तुत अध्याय " विवेच्य नाटकों में सामाजिक संवेदना " शीर्षक से अभिहित है । इस अध्याय में समाज ,सामाजिक तथा सामाजिक संवेदना से तात्पर्य आदि पर विचार किया गया है । इसके साथ ही सामाजिक संवेदना, सामाजिक आदर्श के विभिन्न पहलू ,समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक आर्थिक संवेदना, बेकारी की समस्या, सामाजिक संस्कृति और कला की अभिव्यक्ति तथा सामाजिक-राजनीति की अभिव्यंजन आदि विषयों पर विस्तार के साथ विवेचन किया है । अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं ।

पंचम अध्याय--

प्रस्तुत अध्याय "विवेच्य नाटकों का शिल्पगत अध्ययन" पर केन्द्रित है । इसमें कथ्य, शिल्प और मंचीयता की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का साधार विवेचन किया है । इसमें कथा-शिल्प, चरित्र-शिल्प, वातावरण-शिल्प, संवाद-शिल्प, भाषा-शिल्प, अभिनय-शिल्प, रंगमंच-शिल्प तथा उद्‌देश्य और शीर्षक आदि की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है । अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं ।

अंत में उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबन्ध का सार रूप दिया है । इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं । तत्पश्चात परिशिष्ट में चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी की धर्मपत्नि श्रीमती स्वर्णलता जी का साक्षात्कार संलग्न है ।अंत में संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है ।

लघु शोध-प्रबन्ध की मौलिकता

1 चंद्रगुप्त विद्यालंकार हिंदी साहित्य के प्रसादोत्तर कालखंड के एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक होते हुए भी उचित समीक्षा के अभाव में वे उपेक्षित-से रहे हैं । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर यथोचित प्रकाश डाल कर इस अभाव की पूर्ति का प्रयास किया है ।

2 विवेच्य नाटककार के नाटकों की मूल संवेदना को खोज कर उनकी संवेदना का बोध प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध द्वारा कराया गया है ।

3 रंगमंच के लिए कठिन सिद्ध होने वाले नाटकों में भी अभिनय क्षमता दृष्टिगोचर होती है, इस बात को "अशोक " और " रेवा " नाटकों के विवेचन में स्पष्ट कर दिया है।

4 साहित्य के साथ-साथ पत्रकारिता तथा हिंदी भाषा प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में भी विद्यालंकार जी के योगदान पर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में चर्चा की है । उनके मौलिक विचारों को भी यहाँ प्रस्तुत किया है ।

5 चंद्रगुप्त जी की संवेदना का मूल " अभाव " में है और इसकी पूर्ति के लिए " प्रयत्न" जीवंत संवेदना-बोध है - विद्यालंकार जी की इस मान्यता को इस लघु शोध-प्रबंध में उजागर किया है ।

ऋण-निर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरूजनों, परिवार के सदस्यों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाण, अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी), हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी साहित्य साधक, उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है । अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है । आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना असंभव हैं । बस, यही कहूँगा कि आपके प्रति हरदम कृतज्ञ ही रहूँगा और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद और मार्गदर्शन की कामना करूँगा ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. वसंत मोरे जी तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. पी.एस. पाटील जी से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में यथायोग्य और अनमोल मार्गदर्शन के साथ-साथ स्नेह और प्यार प्राप्त हुआ है । अतः मैं आजन्म उनका ऋणी हूँ । आदरणीय गुरूवर्य श्री. अरविंद पेंतदार, सौ. एम.एस. जाधव जी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है । उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ । मेरी शिक्षा-दीक्षा तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठानेवाले मेरे आदर्शवादी माता-पिता , दादी माँ, भाई-बहन आदि के आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे हैं, जो विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं । अतः आजन्म मैं उनके ऋण में रहूँगा ।

मेरे हितचिंतक मित्र सुभाष पवार, विकास जगदाळे, स्नेही और सहपाठी राजू पवार कु. मनीषा सुर्वे, वरिष्ठ मित्र संपतराव जाधव, विनायक खरदमल तथा अरूण गंभीरे का मुझे इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है अतः इन सभी का मैं ह्रदय से आभारी हूँ । मैं विशेष आभारी हूँ मेरे जेष्ठ मित्र व्यवसायपति श्री प्रमोद पोटे जी और उनके परिवार का जिन्होंने मुझे अपने परिवार का स्नेह दिया । श्रीकांत कुंभोजे , सुधीर माने और मेरे हमदम दोस्त जैनुद्दिन , नंदू और बबन इनका स्मरण मुझे हर वक्त रहेगा ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रन्बध के लिए आवश्यक संदर्भ-ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय(कोल्हापुर), बालकृष्ण ग्रंथालय(राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर) , सयाजीराव गायकवाड मध्यवर्ती ग्रंथालय (काशी हिंदु विश्वविद्यालय , वाराणसी), दिल्ली पब्लिक लायब्ररी , काशी ना.प्र.सभा, वाराणसी आदि से हुई । अतः इन ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ । मैं

आभार प्रकट करता हूँ चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी की सहधर्मिनी श्रीमती स्वर्णलता जी का जिन्होंने मेरी इस शोध-कार्य के लिए आवश्यक और पर्याप्त मदद की । इस शोध-कार्य को पूरा करने में जिन ग्रंथों का प्रत्यक्ष ,अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है,उन ग्रंथों के विद्वान लेखकों का भी मैं ऋणी हूँ । टकंणकर्ता श्री.बाळकृष्ण रा.सावंत जी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ । अंत में इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में जिनका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है उन सब का आभार मानकर मैं इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने विनम्रता से प्रस्तुत करता हूँ ।

कोल्हापुर ।

दिनांक :22:09:1997 ।

शोध-छात्र

(श्री अविराज शिंदे)

**

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – "चंद्रगुप्त विद्यालंकार: जीवन तथा साहित्य।" 1 से 24

1·1 व्यक्ति परिचय –

1·1·1 जन्म

1·1·2 माता–पिता एवं परिवार

1·1·3 बचपन और शिक्षा

1·1·4 विवाह

1·4·5 वैवाहिक जीवन

1·1·6 संतान

1·1·7 मित्र–परिवार

1·1·8 नौकरी

1·1·9 मृत्यु

1·2 व्यक्तित्व –

1·2·1 बहिरंग व्यक्तित्व

1·2·2 अंतरंग व्यक्तित्व

अंतरंग व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू –

1·2·2·1 विविध दर्शनशास्त्रियों से प्रभावित

1·2·2·2 अध्ययन एवं चिंतनशीलता

1·2·2·3 विभिन्न साहित्य एवं साहित्यकारों से प्रभावित

1·2·2·4 घुमक्कड़

1·2·2·5 साहित्य के मर्मज्ञ एवं स्वतंत्र चिंतक

1·2·2·6 मानवतावादी, आदर्शवादी तथा उदारमना

1·3 कृतित्व–

1·3·1 प्रकाशित रचनाएँ –

1·3·2 हिंदी मिशनरी के सच्चे सेवक

	1.3.3	सफल पत्रकार एवं संपादक	
	1.3.4	पुरस्कार एवं सम्मान	
	1.3.5	चंद्रगुप्त विद्यालंकार के जीवन तथा साहित्य का संबंध	
		निष्कर्ष	
द्वितीय अध्याय –		"विवेच्य नाटकों का विषयगत विवेचन"।	25 से 60
	2.1	"अशोक"	
	2.1.1	कथावस्तु	
	2.1.2	विवेच्य नाटक का मूल्यांकन	
	2.2	"रेवा"	
	2.2.1	कथावस्तु	
	2.2.2	विवेच्य नाटक का मूल्यांकन	
	2.3	"देव और मानव "	
	2.3.1	कथावस्तु	
	2.3.2	विवेच्य नाटक का मूल्यांकन	
	2.4	" न्याय की रात"	
	2.4.1	कथावस्तु	
	2.4.2	विवेच्य नाटक का मूल्यांकन	
		निष्कर्ष	
तृतीय अध्याय –		"विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना ।"	61 से 98
	3.1	संवेदना	
	3.2	संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति	
	3.3	संवेदना का अर्थ	
	3.4.	संवेदना की परिभाषा	
	3.5.	राष्ट्रीय संवेदना	
	3.6	राष्ट्रीय संवेदना और राष्ट्रीयता	
	3.7	राष्ट्रीयता का अभाव : राष्ट्रीय संवेदना का मूल	
	3.8	राष्ट्रीयता का जन्म	
	3.9	राष्ट्रीय एकता	

3.10 समस्या और संवेदना

3.11 विवेच्य नाट्य-साहित्य और राष्ट्रीय संवेदना

3.12 विवेच्य नाटकों की संवेदना और परिवर्तित मानसिक स्थिति

3.13 विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना

3.14 विवेच्य नाटकों में राष्ट्र की संस्कृति

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – "विवेच्य नाटकों में सामाजिक संवेदना" । 89 से 123

4.1 समाज शब्द का अर्थ

4.2 सामाजिक शब्द का अर्थ

4.3 सामाजिक संवेदना से तात्पर्य

4.4 सामाजिक संवदेना

4.5 सामाजिक व्यवस्था में संवेदना

4.6 सामाजिक आदर्श के विभिन्न पहलू

4.7 समाज की धार्मिक सांस्कृतिक संवेदना

4.8 सामाजिक आर्थिक संवेदना

4.9 बेकारी की समस्या का विवेचन

4.10 सामाजिक संस्कृति और कला की अभिव्यक्ति

4.11 सामाजिक राजनीति की अभिव्यंजना

निष्कर्ष

पंचम अध्याय – ' विवेच्य नाटकों का शिल्पगत अध्ययन ।" 124 से 215

5.1 कथा-शिल्प

5.1.1 "अशोक "

5.1.2 'रेवा"

5.1.3 "न्याय की रात "

5.2 चरित्र-शिल्प

5.2.1 महत्त्वकांक्षी चरित्र-सृष्टि

5.2.2 आदर्शवादी चरित्र-सृष्टि

5.2.3 भारतीय संस्कृति के प्रतीक रूप में चरित्र-सृष्टि

5.2.4 अन्य-चरित्र-सृष्टि

5.3 संवाद-शिल्प

5.3.1 कथा को गति देनेवाले संवाद

5.3.2 चरित्र का उद्घाटन करनेवाले संवाद

5.3.3 स्वगत कथन

5.3.4 विचारों, सिद्धांतों एवं दार्शनिकता से युक्त संवाद

5.3.5 संक्षिप्त एवं नाटकीय संवाद

5.3.6 काव्योचित मधुर गीत का प्रयोग

5.3.7 सूचनात्मक खंडित संवाद

5.3.8 उपदेशात्मक संवाद

5.3.9 प्रतीकात्मक संवाद

5.3.10 भावात्मक संवाद

5.4. वातावरण-शिल्प

5.5 अभिनय-शिल्प

5.6 भाषा-शिल्प

5.6.1 शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप -

5.6.1.1 तत्सम शब्द

5.6.1.2 तद्भव शब्द

5.6.1.3 देशज शब्द

5.6.1.4 विदेशी शब्द

5.6.1.5 ध्वन्यार्थ व्यंजक शब्द

5.6.1.6 अपशब्द

5.6.1.7 द्विरुक्त शब्द

5.6.2 भाषा सौन्दर्य के साधन -

5.6.2.1 अलंकारिक भाषा

5.6.2.2 मुहावरों, कहावतों से युक्त भाषा

5.6.2.3 दार्शनिक भाषा

5.6.2.4 पात्रानुकूल भाषा

5.6.2.5 वर्णनत्मक भाषा–शैली

5.7 रंगमंच-शिल्प

5.7.1 निर्देशन एवं मंच व्यवस्थापन

5.7.2 रूपसज्जा

5.7.3 दृश्य सज्जा

5.7.4 प्रकाश योजना

5.7.5 ध्वनि एवं संगीत योजना

5.8 उद्देश्य–शिल्प

5.8.1 युद्धकालीन विभीषिका का चित्रण

5.8.2 नीतिमूल्यों की प्रतिष्ठापना

5.8.3 "वसुधैव कुटुम्बकम " की भावना को उजागर करना

5.8.4 नारी समस्या

5.8.6 राजनीतिक समस्याएँ : राजनीतिक अव्यवस्था का पर्दाफाश

5.8.7 राष्ट्रीय अखंड़ता तथा राष्ट्रनिर्माण की भावना

5.9 शीर्षक–शिल्प

निष्कर्ष

* उपसंहार 216 से 224

* परिशिष्ट 225 से 231

* संदर्भ ग्रन्थ–सूची 232 से 234